पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2015-17 प्रकाशित: 16.10.2017 इस अंक का मल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868002130

महर्षि दयानन्द बलिदान दिवस पर अपनी **केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्** को केवल **100/- रू.** दान राशी भेज कर **युवा आन्दोलन** को मजबूत करें

वर्ष-34 अंक-10 कार्तिक-2074 दयानन्दाब्द 193 16 अक्टूबर से 31 अक्टूबर 2017 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.10.2017, E-mail : yuva.udghosh1982@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

मोदी नगर,गाजियाबाद में आर्य महासम्मेलन व आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ में उत्सव सम्पन्न

हिन्दू समाज के संगठित होने से ही राष्ट्र की सभी समस्यायें हल होगी — डा.अनिल आर्य

मंच पर डा.अनिल आर्य का अभिनन्दन करते प्रवीन आर्य,ज्ञानेन्द्रसिंह आर्य,बबली कसाना,रामकुमार आर्य,तेजपालसिंह आर्य व सुरेन्द्रपालसिंह आर्य। द्वितीय चित्र में स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारि का अभिनन्दन करते डॉ. अनिल आर्य, महेन्द्र भाई, हरि ओम दलाल, चांद सिंह योगी, लक्ष्मण पाहुजा, धर्मपाल आर्य व विवेक अग्निहोत्री

रविवार, 1 अक्तुबर 2017,आर्य प्रतिनिधि उपसभा जिला गाजियाबाद के तत्वावधान में जिला आर्य महासम्मेलन का तीन दिवसीय भव्य आयोजन ग्राम—सारा,मोदी नगर,गाजियाबाद—मेरठ बार्डर(उ.प्र.) पर किया गया। केन्द्रीय मंत्री डा.सत्यपाल सिंह ने कहा कि आर्य समाज के साथ आम जन को जोडे तभी महर्षि दयानन्द के स्वपनों का समाज बन सकता है। उन्होंने कहा कि समाज पाखण्ड अन्धविश्वास में फंस रहा है,उसे उस दल दल से निकालना आर्य समाज की जिम्मेदारी है । सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा प्रधान स्वामी आर्य वेश ने भी अपने ओजस्वी उद्बोधन में नशा खोरी के विरूद्ध आन्दोलन चलाने का आह्वान किया। समारोह के विशिष्ट अतिथि परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य ने कहा कि आज समाज में हिन्दूओं के प्रति दुष्प्रचार करने का ठेका कुछ तथाकथित बुद्विजीवियों ने ले रखा है जो समाज का वातावरण दूषित करते रहते है,हमें उनसे सतर्क रहना होगा। आज कोर्टस की न्याय प्रक्रिया पर भी प्रश्न चिन्ह खड़ा हो गया है। आज समय की मांग है कि पूरा हिन्दू समाज ओउम् की पावन पताका के नीचे एक जुट हो तभी राष्ट्र की सभी समस्याओं का हल निकल सकता है। समारोह की अध्यक्षता समाजसेवी श्री बबली कसाना ने की। इस अवसर पर आर्य महिला सम्मेलन में विभा रावत,डा.मन्जु शिवाच(विधायक),डा.नीलम पवार,प्रतिभा सिंघल,ममता दहिया ने अपने विचार रखे व कुशल संचालन वन्दना चौधरी ने किया। युवा गायक अन्जली आर्या व जबरसिंह आर्य के मधुर भजन हुए व पं. विष्णुमित्र वेदार्थी का प्रवचन हुआ। जिला सभा के प्रधान श्री ज्ञानेन्द्रसिंह आर्य,मंत्री श्री तेजपालसिंह आर्य, सुरेन्द्रपालसिंह, फकीर चन्द, श्योराज सिंह, प्रवीन आर्य, सुभाष सिंघल, प्रमोद चौधरी, सुरेश आर्य, रामकुमार सिंह आर्य, सौरभ गुप्ता, शिवम मिश्रा आदि उपस्थित थे। शहर से हट कर दूरदराज के गांव में वेद प्रचार का कार्यक्रम अनुठा रहा।

स्वर्ण जयन्ती पार्क इन्द्रापुरम,गाजियाबाद में भव्य संगीत संध्या सोल्लास सम्पन्न

चित्र में—वैदिक विद्वान पं.कुलदीप आर्य व डा.जयेन्द्र आचार्य का अभिनन्दन करते विजय आर्य,डा.अनिल आर्य,प्रवीन आर्य,देवेन्द्र गुप्ता,विनोद त्यागी,श्रद्धानन्द शर्मा आदि।

रविवार, 15 अक्तुबर 2017,आर्य समाज इन्द्रापुरम,गाजियाबाद के तत्वावधान में स्वर्ण जयन्ती पार्क में भव्य श्री राम कथा का आयोजन किया गया। बिजनौर से पधारे पं.कुलदीप आर्य की रोचक राम कथा हुई उन्होंने कहा कि भगवान श्री राम के वास्तविक स्वरूप को पहचाने और उनके चरित्र से प्रेरणा ग्रहण करें। डा.जयेन्द्र आचार्य ने महर्षि दयानन्द के जीवन संघर्ष की घटनाओं को सुनाते हुए प्रेरणा लेने का आह्वान किया। परिषद् अध्यक्ष डा.अनिल आर्य ने कहा कि आर्य समाज का प्रचार—प्रसार घर घर पंहुचाने के लिये सार्वजनिक स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित किये जाये। परिषद् के महामंत्री महेन्द्र भाई ने 11 कुण्डीय यज्ञ सम्पन्न करवाया। समाज के मंत्री व परिषद् के जिला अध्यक्ष श्री यज्ञवीर चौहान ने कुशल संचालन किया। प्रधान श्री विजय आर्य ने सभी का आभार व्यक्त किया। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के प्रधान शिक्षक सौरभ गुप्ता के संयोजन में आर्य युवकों ने व्यवस्था सम्भाली। प्रमुख रूप से ज्ञानेन्द्रसिंह आर्य,तेजपालसिंह आर्य,सुभाष सिंघल,सत्यवीर चौधरी,प्रमोद चौधरी,के.के.यादव,सुरेश आर्य, रामकुमार आर्य, यशोवीर आर्य, देवेन्द्र गुप्ता, ममता चौहान, महेन्द्र कुमार सिंघल, योगेश आर्य, डा.राजकुमार आर्य, डा.वीरपाल विद्यालंकार, सुरेशप्रसाद आर्य, शिवम मिश्रा आदि उपस्थित थे। समारोह की अध्यक्षता समाजसेवी विनोद त्यागी ने की।

ऋषि की निराली दीवाली

– डॉ. महेश विद्यालंकार

दीपावली अन्धकार पर प्रकाश की विजय का पर्व है। असत्य से सत्य, अज्ञान से ज्ञान, अन्धकार से प्रकाश, मृत्यु से अमृतत्व, पाप से पुण्य, शरीर से आत्मा, और प्रकृति से परमात्मा की ओर चलने का प्रेरणा–पर्व हैं आज बर्हिजगत में रोशनी, चमक–दमक, भौतिक उन्नति–प्रगति, सुख–साध्न आदि तेजी से बढ़ रहे हैं। अर्न्तमन में अन्धकार, जड़ता, अशान्ति असन्तोष, इच्छाएं, वासनाएं, ईर्ष्या–द्वेष, अहंकार आदि का अंधेरा तेजी से बढ़ता जा रहा है। यह पर्व प्रतिवर्ष ज्ञान रूपी प्रकाश लाने व फैलाने का अमर सन्देश देने आता है। यदि जीवन–जगत् को सुखी–शान्त, सन्तुष्ट और सर्व भवन्तु सुखिन बनाना है तो सत्ज्ञान की आंखें खोलकर जीओ व चलो। तभी संसार में विश्वशान्ति, विश्वबन्धुत्व तथा विश्वमानवता की दृष्टि, विचार एवं भावना आ सकेगी।

दीपावली का पर्व आर्य समाज के इतिहास में प्रेरक, स्मरणीय एवम् महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह पर्व आजीवन विषपायी ऋषि देवदयानन्द के निर्वाणोत्सव की अमर बेला की पुण्यतिथि है। इसी दिन उन्होंने अपना पंच भौतिक–नश्वर शरीर छोड़ा था। ऋषि के तप, त्याग, तपस्या, सेवा, उपकारों योगदान आदि के प्रति कृतज्ञता, स्मरण एवं श्रद्धांजलि देने का स्मृति–दिवस है। युगों के बाद वरदान–रूप में प्राप्त महापुरुष के नश्वर शरीर के त्याग की विदा–बेला हैं वह देवपुरुष जाते–जाते भी असंख्य ज्ञान–दीप जला गया। न जाने कितनों को जीवन–दृष्टि दे गया। उसी मुक्तात्मा की अमर–कहानी दीवाली हर वर्ष दुहराने आती है। ऐसी देवात्माएं दुनिया में कभी–कभी आती हैं। प्रभु की इच्छा से आती है और उसी की इच्छा में अपनी इच्छा को पूर्ण मानकर विदा हो जाती है। ऋषि का जीवन भी निराला था और दीवाली भी निराली थी। ये प्रेरक पंक्तियाँ है–

सदियों तक इतिहास न समझ सकेगा,
तुम मानव थे या मानवता के महाकाव्य।

आर्य समाज ऋषि का जीवन्त स्मारक है। ऋषि का समग्र जीवन–दर्शन, मन्तव्य, विचार, सिद्धान्त, उद्देश्य, आदर्श आदि आर्य समाज को वसीयत, विरासत तथा परम्परा में मिले। इन्हीं का प्रचार–प्रसार एवं फलन करना ही आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है। जितना आर्य समाज की विचार धारा का प्रचार–प्रसार और अनुयायी बढ़ेंगे, उतने स्वामी दयानन्द अमर होंगे। आज हम आर्यो के समक्ष ऋषि दयानन्द आर्य समाज और सिद्धान्तों की रक्षा व प्रचार का ज्वलन्त प्रश्न खड़ा हुआ है। यदि इस पर सब मिलकर गंभीरता पूर्वक, ईमानदारी, त्यागभाव, सेवाभाव आदि की दृष्टि से चिन्तन–मनन व क्रियान्वयन नहीं करेंगे तो इतिहास हमें क्षमा नहीं करेगा। यदि ऋषि को जीवित, जागृत व अमर रखना है तो आर्यसमाज को अपने सत्य–स्वरूप को पहिचानना होगा। ऋषि दयानन्द ने जीवन भर नाम, यश, सुख, आराम आदि के लिए न चाहा, न मांगा और न संग्रह किया। कोई मठ, मन्दिर, स्मारक, गद्दी आदि नहीं बनाई। वे रातों में जागकर जीवन–जगत में फैले हुए अज्ञान, अन्धकार, ढोंग, पाखण्ड, पाप–अधर्म, अन्धविश्वास आदि के लिए घन्टों करूण क्रन्दन किया करते थे। हम रात को उठकर रोते हैं, जब सारा आलम सोता है। यह पीड़ा ऋषि की थी। वह युग पुरुष सारा जीवन जहर पीता रहा, पत्थर सहता रहा, गालियां–विरोध सुनता रहा। बदले में संसार को दया और आनन्द लुटाता रहा। वह सत्य का पुजारी जीवन भर असत्य, अधर्म, गुरुडम, मूर्तिपूजा, अवतारवाद तथा वेद विरूद्ध बातों से समझौता नहीं किया। सारे जीवन में कहीं भी आने दिया। वह दिव्यात्मा हर पहलू से खरा ही उतरा। उनके कट्टर विरोधी, आलोचक भी अन्दर से प्रशंसक ही रहे। वह देवपुरुष उनसठ साल के डेपुटेशन पर संसार में आया था। घोर अविद्या में डूबी मानव जाति को वेद पथ और सन्मार्ग दिखाकर चला गया। सच तो यह है कि दुनिया ने ऋषि को समझा, जाना और माना ही नहीं।

दीवाली पर समस्त आर्य समाज व ऋषि भक्त की स्मृति को निर्वाणोत्सव के रूप में मनाते हैं। निर्वाण शब्द मुक्त होना, आगे बढ़ जाना और बुझ जाने के अर्थ में आता है। अजमेर के भिनाई भवन में अन्तिम समय में ऋषिवर शान्तभाव से लेटे थे। सूर्य अस्ताचल को बढ़ रहा था। वह महायोग अनुभव कर रहा था–आज प्रयाण बेला है। पूछा–आज कौन सा मास, पक्ष व दिन है? भक्त ने कहा–आज कार्तिक मास की अमावस्या और दीवाली का पर्व है। पूरे शरीर पर भयंकर फफोले थे। फिर भी उनका मुखमण्डल शान्त व प्रसन्न था। सबको संगठित होकर प्रेमपूर्वक रहने का उपदेश दिया। थोड़ी देर बाद बोले–सभी खिड़कियाँ–दरवाजे खोल दो। प्रार्थना–मन्त्रपाठ किया। तीव्र स्वर से ओ३म् का उच्चारण करने लगे। शान्त भाव में मुख से उच्चरित होने लगा है–दयामय सर्वशक्तिमान परमेश्वर! तेरी यही इच्छा है, तेरी इच्छा पूर्ण हो। अदभुत तेरी लीला है। यह कहकर लम्बी श्वास खंची और बाहर निकाल दी। प्रभु का प्यारा देवता अपनी इहलीला समाप्त कर प्रभु की शरण में चला गा। सभी भक्त जन असहाय होकर देखते रहे। पं. गुरुदत्त जी पहली बार ऋषि के दर्शन करने आए थे। ईश्वर पर उनकी दृढ़ आस्था नहीं थी। ऋषि की अन्तिम यात्राा के अपूर्व दृश्य को देखकर नास्तिक गुरुदत्त पक्के ईश्वर विश्वासी आस्तिक बन गए। उन्होंने सम्पूर्ण शेष जीवन ऋषि–मिशन के लिए समर्पित कर दिया। जाते–जाते भी ऋषि गुरुदत्त जी को ईश्वर विश्वास का सन्देश दे गए। ऋषि का सम्पूर्ण जीवन प्रेरक व शिक्षाप्रद था। मृत्यु भी प्रेरक बनीं दीवाली पर प्रभु–भक्त योगी की ज्योति को जलाये रखना और आर्यसमाज को आगे बढ़ाते रहना। संसार के इतिहास में मृत्युंजयी ऋषि ऐसे थे जो होश में तिथि पूछकर, स्नान–प्रार्थना करके, प्रभु का स्मरण–धन्यवाद करते हुए, अपने विषदाता को क्षमादान देकर प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो कहते हुए गए। ऐसी अद्भुत चमत्कारी प्रेरक मृत्यु निराले मुकात्मा को ही सौभाग्य से मिलती हैं ऋषिवर। तुम धन्य हो। तुम्हारा तप त्याग सेवा भरा आजीवन संघर्षपूर्ण इतिहास स्वर्णिम व प्रशंसनीय है। तुम्हारे उपकार व योगदान स्मरणीय एवं वन्दनीय है। तुमने न जाने कितने जीवन–पथ से भटके हुए लोगों को नव जीवन दिया। तुमने भारतीय स्वर्णिम इतिहास के प्रेरक पृष्ठों को संसार के सामने रखा। जिसने तुम्हें देखा, सुना, पढ़ा और जो सम्पर्क में आया वह अमूल्य हीरा बन गया। तुम सत्य के अन्वेषक वक्ता, पुजारी, प्रचारक और अन्त में सत्य पर ही शहीद हो गए। तुम्हारा दूसरा पर्याय और कोई नहीं हुआ।

दीवाली ऋषि–स्मृति पर्व है। उस महामानव के उपकारों, योगदान, महत्व, विशेषताओं आदि को स्मरण व कृतज्ञता प्रकट करने की पुण्यतिथि है। संकल्प लेने, दुहराने और अपने को सुधरने की मंगल बेला है। ऋषि भक्तों! आर्यो। उठो! जागो। आँखें खोलो। अपने स्वरूप को पहिचानो। अन्तस में ज्ञानदीप जलाओं। प्रतिवर्ष परम्परागत दीवाली आती है। हम आर्यजन भी ऋषि निर्वाणोत्सव मनाते है, मेला लगता है, भाषण होते हैं, भीड़ बिखर जाती है। हम अपना कर्त्तव्य पूरा समझते हैं। सोचो! क्या निर्वाणोत्सव की यही मूल चेतना, सन्देश व भावना है? ये पर्व, जयन्तियाँ, उत्सव, वेद कथाएं, यज्ञ, सम्मेलन आदि हमें जगाने, संभालने, आत्मबोध व सत्यबोध कराने आते हैं और दृष्टि, सोच, विचार व ज्ञान देते हैं–क्या खोया, क्या पाया? कहाँ के लिए चले थे, कहा जा रहे हैं? जिन उद्देश्यों, आदर्शो, विचारों, सिद्धान्तों व नवजागरण के लिए जीवन बलिदानी ऋषि ने आर्य समाज बनाया था, जो हमें कर्त्तव्य व जिम्मेदारी सौंपी थी, ऋषि श्रद्धांजलि और ज्योति पर्व हमसे पूछ रहा है–उन कार्यो लिए हम क्या कर रहे हैं? क्या हमारा जीवन आर्यत्वपूर्ण है? कुछ नहीं किया तो कुछ करने का विचार, संकल्प व व्रत लो। जब जाग जाओ, तभी सबेरा है। ऋषि भक्त व आर्य समाज अनुयायी कहलाना है, तो उनके बताए रास्ते पर चलो। यह ऋषि स्मृति का प्रकाश पर्व कह रहा है। अपने अन्दर के व्यर्थ के अहंकार, स्वार्थ, ईर्ष्या–द्वेष, पद–प्रतिष्ठा आदि के अज्ञान को ज्ञान विचार विवेक से हटाओ। भूल में भूल हो रही है। व्यर्थ के विवादों, झगड़ों, समस्याओं आदि में समय, शक्ति, धन व सोच को मत लगाओ। आर्य समाज के पास बहुत बड़ी विचार सम्पदा है। उसको संभालो। तभी ऋषि निर्वाणोत्सव की सार्थकता उपयोगिता तथा सच्ची ऋषि श्रद्धांजलि होगी।

–बी.जे. 29, पूर्वी शालीमार बाग, दिल्ली

80 आर्यो की केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की प्रथम थाईलैंड आर्य यात्रा

केंद्रीय आर्य युवक परिषद की प्रथम थाईलैंड आर्य यात्रा 28 सितम्बर को दिल्ली के अंतराष्ट्रीय हवाई अड्डा टी–3 से शाम 5.30 बजे से शुरू हुई। केसरिया रंग के पटके और केसरी टोपी पहने आर्यो ने पूरे हवाई अड्डे को केसरिये रंग से रंग दिया। विदाई समारोह गेट नम्बर 1 पर केंद्रीय आर्य युवक परिषद की टीम ने सबको स्वामी दयानंद के बिल्ले टोपियों और पटको से सत्कार किया। स्वामी आर्यवेश जी के प्रवचनों, महेंद्र भाईजी द्वारा मंत्रो से पूरे हवाई अड्डे को अपनी ओर आकर्षित किया, अनिल आर्य जी ने विदाई संदेश में कहा कि हमे अपने देश के साथ साथ विदेशो में भी स्वामी दयानंद का संदेश पहुचाना है। इसके बाद रामकुमार जी ने सबको बर्फी बाटकर सबका मुँह मीठा करवाया।

सभी आर्यो ने फैब हॉलीडेज के दो सदस्यों के साथ स्पाइस जेट के विमान से 9.20 पर उड़ान भरके 3.30 पर थाईलैंड पहुंचे। वहाँ पर एयरपोर्ट पर दो वॉल्वो बसे गेट पर हमारा इन तजार कर रही थी जिसमे दो गाइड मौजूद थे यह बसे औए गाइड पूरे थाईलैंड के ट्रिप में हमारे साथ रहे।

बसे हमे लेकर टाइगर जू पार्क गयी वह पर सभी के नाश्ते का ईनतजम था, एक बस वहा कुछ लोगो के साथ जू पार्क देखने को रुक गयी और एक बस पट्टाया के लिए निकल गई। वह पर बोद्ध मंदिर में लोगो ने वहाँ के मंदिर को नए रूप में देखा। उसके बाद 2 बजे लोगो ने 3 स्टार होटल बेवर्ली प्लाजा में भोजन एवं आराम किया। शाम को बस द्वारा साइट सीन और एक वेजीटेरियन रेस्टुरेंट में सबने भोजन किया।

अगले दिन सुबह सब नाश्ता करके कोरल आइलैंड स्पीड बोट द्वारा गए रास्ते मे कुछ व्यक्तियों ने पेरागलिडिंग की। दोपहर को भोजन के बाद लोग शॉपिंग करने चले गए।

तीसरे दिन सुबह 8 बजे नाश्ता करने के बाद सब बैंगकॉक आर्य समाज के लिए रवाना हो गए। वहाँ पर श्री एस पी सिंह के नेतृत्व में बहुत ही सुंदर स्वागत का आयोजन किया गया था। सबने हवन के पश्चात चाय लेने के बाद आचार्य विजय भूषण जी द्वारा भजन के कार्यक्रम का सूंदर संचालन हुआ। आर्य समाज बैंकॉक में जिसकी स्थापना 1920 में की गई थी। इसी आर्य समाज में "सुभाष चन्द्र बोस जी" का हैड ऑफिस था जिसकी दो वर्ष पश्चात् शताब्दी मनायी जाने वाली है। हमारा ये परम सौभाग्य है कि हम इस समाज में पधारे और हवन में शामिल हुए।

हवन के पश्चात् भारत के विभिन्न स्थानों से आये हुए ग्रुप के सदस्यों न सुन्दर भजन प्रस्तुत किया। डॉ. सुषमा आर्या ने प्रवचन के माध्यम से जीवनोपयोगी संदेश दिया और आचार्य विजय भूषण आर्य ने भजन भी प्रस्तुत किया और पूरे कार्यक्रम का सुन्दर संचालन भी किया। श्री देवेन्द्र भगत ने धन्यवाद प्रस्तुत किया। श्री रामपाल पांडेय जी ने अंत में सभी भारतीयों का स्वागत किया।

उसके बाद सब बैंकाक के होटल दा सीजन में आये। कुछ देर आराम करने के बाद कुछ सदस्य क्रूज बोट का भर्मण करने गए। अगले दिन सुबह 9 बजे सफारी पार्क में लोगो ने भ्रमण किया और वहाँ के शोज का आनंद लिया। आखिरी दिन 12 बजे होटल से चेक आउट करने के बाद बैंकाक के बोद्ध मार्बल मंदिर के देखने के बाद लोग इंदिरा मार्किट शॉपिंग करने गए रात को भोजन करने के बाद गाइडो ने धन्यवाद देकर सभी आर्यो को विदाई दी। 4 अक्टूबर को सुबह 6.45 पर सब वापिस दिल्ली अपनी थाईलैंड यात्रा के अस्मर्णीय पल समेटे अपने अपने घरों को रवाना हुए।

रूद्रपुर, उत्तराखण्ड आर्य सम्मेलन में प्रस्तुत

युवा–प्रौढ़ हृदय सम्राट डॉ. अनिल आर्य

समय की पुकार पर, स्वर हुंकार भर।
क्रांति के पथिक बन, क्रांति दूत आये हैं।।
युवा भक्ति जाग जाए, स्वयं को पहचान जाए।
यही लक्ष्य धार कर, जागरण चलाए हैं।।

जम्मू की समस्या हो या बंगाल में अत्याचार।
कैसे हो निदान इनका सोच मन लाये हैं।।
यत्र-तत्र-सर्वत्र, युवाओं के मध्य में जा।
सोए हुए केहरियों को जगाने फिर आये हैं।।

संस्कार-हीन युवा, दिया भ्रम हुआ आज।
संस्कार देने उसे, क्रांति दूत आए हैं।।
ऋषि का उद्देय पूर्ण, युवा ही करेंगे आज।
यही संदेश देने, कदम बढ़ाये हैं।।

अनिल प्रचण्ड जब, 'अनिल' चलावैं देवे।
जर्जर सोच वाले, कहां टिक पाये हैं।।
'अनिल' पधारे आज, अनल बनेंगे युवा।
'सरस' बरस बहुत, बीते आप आये हैं।।

दानी महानुभावों से अपीलः- यदि आप केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों से सन्तुष्ट हैं तो हमें सहयोग करें,कृपया अपना सहयोग परिषद् के खाता सं. 10205148690 स्टेट बैंक आफ इण्डिया, घन्टाघर, दिल्ली–110007, आई.एफ.एस.कोड-SBIN0001280 पर सीधे भेज कर हमें फोन न. 9868002130 पर एस.एम.एस कर दें जिससे रसीद भेजी जा सके। अग्रिम धन्यवाद सहित

– डा. अनिल आर्य, मो.09810117464

आर्य समाज के गौरव

आर्य समाज की जिन लोगों ने तन–मन–धन से सेवा की है और महर्षि दयानन्द के सिद्धांतानुसार जीवन पर चलते हुए आर्य समाज के गौरव को बढ़ाया है। ऐसे 100 विद्वानों का जीवन चरित्र, कार्य, उपदेश आदि के लिए हुए आर्य समाज के गौरव नामक ऐतिहासिक ग्रंथ होगा, जो आर्ट पेपर पर छपेगा। कृपया आप अपना एक रंगीन पासपोर्ट साइज फोटो, जन्म से आज तक का पूर्ण विवरण भेजने की कृपा करें। जिसमें संन्यासी, महोपदेशक, भजनोपदेशक, विदुषी महिलाएं, राजनेता, शिक्षाविद्, लेखक, समाजसेवी, दानी एवं उद्योगपति आदि होंगे, जिनकी आयु 40 वर्ष से ऊपर हो। समिति के निर्णयानुसार प्रकाशित होगा।

ठाकुर विक्रम सिंह, अध्यक्ष
राष्ट्र निर्माण पार्टी, ए–41, द्वितीय फलोर, लाजपत नगर–2, निकट मेट्रो स्टेशन, नई दिल्ली–110024,
फोन–011–45791152, 29842527, 9599107207

ओ३म् के रस को मन में घोल

जीवन की घड़िया है अनमोल, इनका कुछ तो समझो मोल,
जाग जरा अब आखें खोल, ओ३म् के रस को मन में घोल।
यूं न जीवन बर्बाद करो, कुछ तो समझो याद करो,
जागो उठो मन की गांठे खोल,
ओ३म् के रस को मन में घोल।
तेरा जीवन महान है, धर्म की पूरी खान है,
मन से बोलो अच्छे बोल,
ओ३म् के रस को मन में घोल।
चार दिन की जिन्दगानी है, जीवन तो एक कहानी है,
सबसे बोलो मीठे बोल, ओ३म् के रस को मन में घोल।
करता क्यूं अभिमान है, झूठी तेरी शान है,
बोलने से शब्दों को तोल, ओ३म् के रस को मन में घोल,
जीवन की घड़ियां है अनमोल।

– ऋषि राम कुमार, 112, सैक्टर 5, पार्ट-3, गुड़गांव (हरियाणा)

आर्य समाज सरस्वती विहार,दिल्ली व रूद्रपुर,उत्तराखण्ड का आर्य सम्मेलन सम्पन्न

रविवार, 15 अक्तुबर 2017, आर्य समाज सरस्वती विहार, दिल्ली का वेद प्रचार सप्ताह सोल्लास सम्पन्न हुआ। आचार्य सुभाष जी,डा.वीरपाल विद्यालंकार के प्रवचन हुए व आचार्य सतीश सत्यम के मधुर भजन हुए। चित्र में–विदुषी डा.संध्या(हरिद्वार) का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य,प्रधान ओमप्रकाश मनचंदा,डा.वीरपाल विद्यालंकार,हर्ष आर्या व मंत्री अरूण आर्य। द्वितीय चित्र–रविवार 8 अक्तुबर 2017,जिला सभा रूद्रपुर,उत्तराखण्ड का आर्य महासम्मेलन सोल्लास मनाया गया। मंच पर गोविन्दसिंह भण्डारी(बागेश्वर),स्वामी आर्यवेश जी,रामकुमारसिंह आर्य(दिल्ली),प्रेमप्रकाश शर्मा(देहरादून) आदि।

आर्य समाज, अशोक विहार फेज–1 व फेज–2 का वेद प्रचार साथ साथ सम्पन्न

रविवार, 15 अक्तुबर 2017,आर्य समाज,अशोक विहार,फेज–1, दिल्ली में विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। आचार्य नरेन्द्र मैत्रेय ने यज्ञ सम्पन्न करवाया व आशा भटनागर के कुशल संयोजन में बच्चों ने संगीत के सुन्दर कार्यक्रम प्रस्तुत किये। चित्र में–पुरस्कृत बच्चों के साथ डा.अनिल आर्य,आनन्दप्रकाश आर्य,प्रधान प्रेमकुमार सचदेवा,मंत्री जीवनलाल आर्य,विजय हंस व आशा भटनागर आदि। –छायाकार–देवेन्द्र भगत। द्वितीय चित्र–आर्य समाज अशोक विहार,फेज–2 का उत्सव भी सोल्लास मनाया गया। चित्र में–आचार्य प्रेमपाल शास्त्री,भाजपा नेता मांगेराम गर्ग व डा.अनिल आर्य।

परिषद् के शिक्षक माधवसिंह आर्य व सौरभ गुप्ता का अभिनन्दन

सोमवार, 9 अक्तुबर 2017,परिषद् के शिक्षक माधव सिंह आर्य का 23 वां जन्मोत्सव आर्य समाज नरेला,दिल्ली में सोल्लास मनाया गया। आचार्य महेन्द्र भाई ने यज्ञ करवाया। चित्र में–माधव सिंह का शाल से अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य,महेन्द्र भाई व रामकुमार आर्य,साथ में माता व पिता जी। द्वितीय चित्र–परिषद् के प्रधान शिक्षक सौरभ गुप्ता का आर्य समाज इन्द्रापुरम में भव्य स्वागत किया गया,साथ में–राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य,सुरेशप्रसाद आर्य,गौरव गुप्ता,रामकुमार आर्य,प्रवीन आर्य,विनोद त्यागी,विजय आर्य आदि।

आर्य समाज रमेश नगर के वातानुकुलित सभागार का उद्घाटन व पं.धनेश्वर बेहरा का स्वागत

शुक्रवार, 13 अक्तुबर 2017,आर्य समाज रमेश नगर,दिल्ली के भव्य वातानुकुलित सभागार का उद्घाटन हुआ। चित्र में–श्रीमती व श्री गुलशन विरमानी(पार्षद) का स्वागत करते डा.अनिल आर्य,नरेश विज,प्रधान नरेन्द्र आर्य सुमन,ललित जी पत्रकार। द्वितीय चित्र–परिषद् के प्रान्तीय अध्यक्ष पं.धनेश्वर बेहरा(उड़ीसा) का आर्य समाज,दीवान हाल,दिल्ली में स्वागत करते श्री विजेन्द्र गुप्ता,डा.अनिल आर्य,वेदप्रकाश आर्य,मित्रमहेश आर्य(अहमदाबाद) आदि।

शोक समाचार: विनम्र श्रद्धांजलि

1. श्रीमती पार्वती देवी (धर्मपत्नी श्री जगदीशप्रसाद शर्मा, प्रधान, आर्य समाज, मानसरोवर, शाहदरा, दिल्ली) का निधन।
2. श्रीमती कमला त्यागी (बहिन श्री प्रकाशवीर शास्त्री, सांसद) का निधन।
3. श्री प्रकाशवीर आर्य (सुपुत्र पं. इन्द्रसेन विश्वप्रेमी भजनोपदेशक) का निधन।

आर्य समाज,नोएडा का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज, सैक्टर–33, नोएडा का वार्षिकोत्सव दिनांक 6 दिसम्बर से 10 दिसम्बर 2017 तक सोल्लास मनाया जायेगा। डा.जयेन्द्र आचार्य यज्ञ के ब्रह्मा रहेंगे। सपरिवार दर्शन देकर समारोह को सफल बनाये

–कै.अशोक गुलाटी, मंत्री

सम्पादक: अनिल कुमार आर्य द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए मंयक प्रिंटर्स,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी–176–177, कबीर बस्ती, दिल्ली–7 से प्रकाशित, प्रबन्धक : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970